दिनाँक :- 11-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तर काल (स्रोत)

ब्राह्मण धर्म : शैव उपासना - शिव से प्रथम परिचय सिंधु घाटी की सभ्यता में होता है। ऋग्वेद में रुद्र की चर्चा देवता के रूप में की गई है। यहां रुद्र प्रकृति के अक्रोध पूर्ण शैव घातक तत्वों के प्रतीक थे जो पशुओं का विनाश करते थे तथा मनुष्यों को दुःख देते थे।

यजुर्वेद के सुप्रसिद्ध शतरुद्रीय सूक्त में रुद्र के विनाशक

रूपो के साथ-साथ उनके उदार गुणो की भी चर्चा की गई है इस प्रकार वैदिक काल की तुलना मे उत्तरवैदिक काल तक उनका महत्व बढ़ गया।

अथर्ववेद मे रुद्र के सात नाम मिलते है रुद्र, भव सर्व पशुपति, उग्र, महादेव, ईशान।

परवर्ती काल मे शिव उपासना के साथ भक्ति के उपनिषद मे शिव की चर्चा मिलती है श्वेताश्वर उपनिषद मे शिव भक्ति का पहला उल्लेख है। जहा पर ऋषि श्वेताश्वर भक्ति पूर्वक रुद्र की शरण लेता है बौद्ध ग्रंथ निद्देस मे शिव, महादेव तथा महेश्वर भी मिलते है कौशितकी ब्राह्मण मे ईशान तथा महादेव की चर्चा है यह तथा शतपथ ब्राह्मण मे उनके आठ नाम अशनि का भी उल्लेख हुआ है। इनमे चार नाम दयालु रूप तथा चार नाम विनाशक रूपो को प्रदर्शित करते है

पाणिनी ने अष्टाध्यायी में शैव भागवत की चर्चा की है। मेगास्थनीज भी डायोनिसस (शिव) की पूजा का उल्लेख करता है।
ईसा पूर्व दूसरी सदी में पास इस युग में एक देवता जियस अम्ब्रियस की चर्चा मिलती है। इनकी पहचान रुद्र एवं इन्द्र अथवा पार्जन्य से हुई है।
सिक्कों को ऐसा प्रमाणित होता है कि कुषाण साम्राज्य में ननैया मित्र ग्रा मिहिर (सूर्य), माओ (चंद्रमा), फरो (अग्नि) जैसे बेबीलोनियन तथा इरानी देवता की भी पूजा होती थी।
पार्थियन शासक गोंडोफर्निस ने अपने सिक्कों में अपने को देवता या सुदेवव्रत कहा है।
तारानाथ के अनुसार अश्वघोष बौद्ध बनने से पहले शिवका भक्त था।
साहित्य में शिव के विभिन्न नाम हैं: ईश्वर, महेश्वर, सनाधि
शिव के पुत्र कार्तिकेय की पूजा या तो अकेले या फिर उमा के साथ होती थी। स्कंद, महासेन और कुमार

Scanned with CamScanner

को एक ही माना जा सकता है किंतु महाभारत कहता है

कि विशाख का जन्म स्कंध के दक्षिण भाग से हुआ है।

शक्ति (दुर्गा) के सात नाम दिए गए हैं: ब्राह्मी माहेश्वरी

कौमारी, वैष्णवी, वराहि, नृसिंही और ऐन्द्रि (ऐन्द्री)

देवी की आराधना तीन प्रकार से की जाती है।

① समाधि (ध्यान द्वारा) ② रहस्यपूर्ण चक्रपूजा

③ सत्य सिद्धांत के द्वारा

चक्रपूजा एक शाक्त अनुष्ठान है। इसमें नारी के अंग

की पूजा एक चक्र के रूप में की जाती है।

शाक्तों के दो वर्ग थे।

① कौलिक: ये नारी अंग की मूर्ति की पूजा करते थे।

② समयी: ये किसी जीवित सुंदर स्त्री के अंग की पूजा

करते थे। आनंद ने ग्रंथ "शंकर दिग्विजय" में छः प्रकार

के गणपति संप्रदायों का उल्लेख किया है।

कला और साहित्य:- खवारिज्म के टोपरकला नामक

स्थान पर एक विशाल कुषाण प्रासाद खुदाई में मिला है जो तीसरी-चौथी सदी का है। इनमें एक प्रशासनिक अभिलेखागार था, जिसमें अरामाइक लिपी और खरोष्ठी भाषा में लिखा गया लेख है।

① इंडोमाल (तक्षशिला का मंदिर) ② नागरी (राजस्थान)
③ वेसनगर (म० प्रदेश) भगवती मंदिर
④ नागार्जुन कोंड का षट्कोणीय शिखर वाला मंदिर

फाहियान ने अपने वृतांत में पुरुषपुर के उल्लेख किया है। यह तेरह मंजिली भव्य इमारत था। वस्तुतः मंदिरों का निर्माण और उसमें पूजा की प्रक्रिया बाद के वर्षों में शुरू हो गई। इस काल में बौद्ध स्तूप और अन्य धार्मिक इमारतें ज्यादा बनाई गई।

स्तूप –

स्तूपों का आकार अर्द्धवृत्ताकार होता था। उसका ऊपरी हिस्सा समतल होता था। उसे हर्मिक या ईश्वर

का आवास स्थल माना जाता था। स्तूपो को मेढ़ी
को आयताकार रूप मे बाहर की ओर चारो दिशाओ
मे थोड़ा-थोड़ा बढ़ा दिया जाता था इसमे आगे की ओर
जो चबूतरा निकल आता था उसे आयक कहा जाता था
मेढ़ी से आगे निकले हुए इन सुंदर चबूतरो पर पांच
सुंदर स्तंभ बनाये जाते थे जिसे आयक स्तंभ कहा
जाता था। यही पर बुद्ध या किसी अन्य धार्मिक व्यक्ति
का अवशेष सोने या चाँदी के डिब्बे मे रखा जाता था।
मध्य मे लकड़ी का एक खंभा होता था और खंभे
के ऊपर तीन छत्रियाँ होती थी, जो सम्मान, श्रद्धा और
उदारता का प्रतीक होती थी।

(1) महत्वपूर्ण स्तूप :- बोधगया (बिहार) अशोक ने इसे
निर्मित कराया। इन पर जातक कथाएँ चित्रित की गई है
(2) साँची का स्तूप : संभवतः यह भारत का सबसे

महत्वपूर्ण मौर्य स्तूप है। इसका निर्माण अशोक काल (250 ई० पू०) में हुआ। 150 ई० पू० में शुंग काल में आकर इसे दुगुना किया गया। इसके दक्षिण द्वार पर एक वक्तव्य है, जिसके अनुसार यह प्रवेश द्वार राजा शातकर्णी ने धर्म के लिए दान किया। इस पर बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रमुख घटनाएँ वर्णित है।

① जन्म ② बोधिसत्व की प्राप्ति ③ धर्म चक्र परिवर्तन ④ महापरिनिर्वाण

आरंभिक चरणों में बुद्ध का प्रतिनिधित्व प्रतीकों के माध्यम से हुआ है। परंतु प्रथम सदी से इन प्रतीकों के साथ बुद्ध की प्रतिमा बनने लगी।

② मथुरा: इस स्थान पर भी इस काल को स्तूप मिले हैं।

③ अमरावती: यह स्तूप सफेद संगमरमर से बना है। यहाँ कई प्रकार की मूर्तियाँ पाई गई है। यहाँ आरम्भिक चरणों में बुद्ध का प्रतिनिधित्व प्रतीकों में से हुआ है।

Scanned with CamScanner